D'IO

अपने आसपास के निकट संसार को खोज चुकने के बाद, बालक पहली बार अपनी ही ओर दृष्टि मोड़ता है।
नेमेसिस के बनाए गहरे गड्ढे के पानी में, या घर के स्नानघर के आईने में,
वह अपनी आँखें अपनी ही आँखों के भीतर रखता है और पाता है कि वह किसी और को देख रहा है: ईश्वर को।
एक क्षण वह हक्का-बक्का खड़ा रहता है, अपनी परितारिका के रंग में उलटे पड़े स्वयं को देखता हुआ।
अपनी ही पुतली के चारों ओर का सदा बदलता दृश्य उसे पृथ्वी से परे के दृश्यों की कथा सुनाता है।
झाड़ियों के पीछे किसी जानवर से, या गलियारे में बजते टेलीफ़ोन से ध्यान भटकते ही,
बालक संसार में लौट आता है और जो अभी-अभी देखा था उसे भूल जाता है।
इतने पास का, मित्र-सा ईश्वर मिल जाना बहुत आसान लगता है, और इसलिए सच नहीं हो सकता।
बालक तोड़ता है और बनाता है, दूसरों की आँखों में ईश्वर को खोजता है; और अब पुरुष बन चुका वह फिर स्वयं की
आँखों में झाँकता पाता है, और अपनी परितारिका में एक दृश्य पाता है — गड्ढों से बदला हुआ, दूसरे आकाशीय पिंडों की टक्करों से आहत, सूर्यों से
गरमाया या भीतर ढह गए तारों की मृत्यु से जमा हुआ।
पुरुष बन चुका वही बालक फिर ईश्वर को देखता है और, रोंगटे खड़े किए, उससे बोलने लगता है: वह जानना चाहता है कि वह कौन है, और उसे कहाँ जाना है।
ईश्वर आईने से उसे मूढ़ता से ताकता रहता है, कोई उत्तर नहीं देता, और वयस्क को लगता है कि वह अकेले ही बोल रहा है।
कोई रोता हुआ बच्चा या बजता हुआ अलार्म वयस्क को संसार में लौटा लाता है।
जो ईश्वर उत्तर नहीं देता, वह बहरा ईश्वर है, दुष्ट ईश्वर है, और ऐसा ईश्वर है जो है ही नहीं।
यहाँ तक कि वृद्ध हो चुका वह वयस्क एक सुबह मुँह धोते हुए फिर स्वयं के सामने आ खड़ा होता है:
उसकी आँखों का वह पृथ्वीतर दृश्य, जहाँ से वह आया है और जहाँ लौटने ही वाला है, फिर बदल चुका है;
उसमें बसा ईश्वर फूलों के गुंथाव, पौराणिक पशुओं की छायाओं और रंगीन ऊन के गोलों के इंद्रधनुषों के बीच निर्विकार उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।
वह बालक, जो पुरुष बना और फिर वृद्ध, अपनी ही आँखों में D'Io से मिलने चल पड़ेगा — ईश्वर से, और 'मैं' से।

Luca Motolese · Alassio 2008

motolese.com — मूल पाठ इतालवी में